आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 13/05/2026; Revised: 20/06/2026; Accepted: 23/06/2026; Published: 28/06/2026

# "वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय अस्मिता और हिन्दी साहित्य"

**[1]अवधेश कुमार मौर्य**

हिन्दी विभाग

दयानन्द एंग्लोवैदिक कॉलेज- कानपुर

Email.id:- awadheshkumarmaurya93@gmail.com

Mob:- 9793214454

**[2]डॉरश्मि सूद .**

(असिस्टेंट प्रोफेसर(

**[1]अवधेश कुमार मौर्य, [2]डॉरश्मि सूद . , "वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय अस्मिता और हिन्दी साहित्य",** आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(200 -204)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21441518

**अनुरूपी लेखक :** [1] **अवधेश कुमार मौर्य,** शोधार्थी, हिंदी विभाग , दयानन्द एंग्लोवैदिक कॉलेज - कानपुर

सह लेखक [2] डॉरश्मि सूद ., शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, दयानन्द एंग्लोवैदिक कॉलेज - कानपुर.

**सारः-** वैश्वीकरण ने भारतीय समाज की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए हैं। हिन्दी साहित्य, जो भारतीय समाज की संवेदना और राष्ट्रीय चेतना का दर्पण रहा हैइन . परिवर्तनों को न केवल दर्ज करता है, बल्कि उन पर आलोचनात्मक दृष्टि भी प्रस्तुत करता है। समकालीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न अत्यंत केंद्रीय बनकर उभरा है। प्रेमचंद, उदय प्रकाश, संजीव,

ओमप्रकाश वाल्मीकि, अरुण कमल और अनामिका जैसी रचनाओं में ग्रामीण जीवन, शहरी एकाकीपन, विस्थापन, दलित और स्त्री विमर्श जैसे विषयों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को बनाए रखने का प्रयास किया गया है। प्रवासी हिन्दी साहित्य ने वैश्विक संदर्भ में सांस्कृतिक पहचान और जड़ों से जुड़ाव की चुनौती को उजागर किया है।

अंततः यह अध्ययन पुष्टि करता है कि हिन्दी साहित्य वैश्वीकरण की चुनौतियों के बीच भारतीय संस्कृति, लोकबोध और मानवीय मूल्यों की रक्षा करते हुए राष्ट्रीय अस्मिता को अधिक लोकतांत्रिक, समावेशी और जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

**बीज शब्द -** वैश्वीकरण, प्रवासी साहित्य, सांस्कृतिक पहचान, भारतीय संस्कृति

**प्रस्तावना -** वैश्वीकरण आधुनिक विश्व की एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक स्तर पर गहरे परिवर्तन किए हैं। संचार तकनीक, बहुराष्ट्रीय पूँजी, बाजारवादी संस्कृति और उपभोक्तावादी मानसिकता ने न केवल राष्ट्रों की सीमाओं को शिथिल किया है, बल्कि व्यक्ति की पहचान, जीवनशैली और सांस्कृतिक चेतना को भी प्रभावित किया है।- भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में वैश्वीकरण के प्रभाव विशेष रूप से जटिल और बहुआयामी रहे हैं। हिन्दी साहित्य भारतीय समाज की संवेदना, चेतना और सांस्कृतिक स्मृति का सशक्त माध्यम रहा है। यह समाज में घटित परिवर्तनों को केवल दर्ज ही नहीं करता, बल्कि उन पर प्रश्न भी उठाता है। वैश्वीकरण के संदर्भ में हिन्दी साहित्य के सामने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न राष्ट्रीय अस्मिता का है कि इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारतीय पहचान, लोकबोध और सांस्कृतिक मूल्य किस रूप में सुरक्षित रह सकते हैं।

**वैश्वीकरण और राष्ट्रीय अस्मिता का साहित्यिक संकटः-** वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर भौतिक सुविधाओं, संचार और अवसरों का विस्तार किया है, वहीं दूसरी ओर उसने सांस्कृतिक एकरूपता, बाजारवाद और उपभोक्तावाद को भी बढ़ावा दिया है। स्थानीय भाषाएँ, लोकसंस्कृतियाँ और पारंपरिक मूल्य इस प्रक्रिया में संकटग्रस्त हुए हैं। आलोचक नामवर सिंह ने वैश्वीकरण को 'सांस्कृतिक पूँजीवाद का विस्तार मानते हुए चेतावनी दी है कि तो उसकी सामाजिक प्रतिबद्धता कमजोर पड़ .साहित्य यदि बाजार के दबाव में आ गया" सकती है। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता एक संघर्षशील चेतना के रूप में सामने आती है।1"

**हिन्दी कथा साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता –**

**प्रेमचंद और राष्ट्रीय चेतना -**प्रेमचन्द कालजयी रचनाकार हैं। आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के प्रबल समर्थक प्रेमचन्द समाज में स्वस्थ परम्परा एवं मानवतावादी विचार के पक्षधर माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित होता दिखाई देता है। विदेशी दासता से मुक्ति पाने की तीव्र आकांक्षा इनकी रचनाओं में दिखाई देती है। "सोजे वतन" कहानी संग्रह में संग्रहित कहानी "दुनिया का सबसे अनमोल रतन" में वीर सैनिक की वीरता को दर्शाया गया है। वह मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में

ही संतुष्टि का अनुभव करता है। रक्तरंजित शरीर से निकलती हुई रक्त की बूंद ही दुनिया का सबसे अनमोल रतन है। प्रेमिका द्वारा मंगाई गई रत्नजड़ित मंजूषा से निकलती तख्ती पर स्वर्णाक्षरों में लिखा हैखून का " - वह आखिरी कतरा जोवतन की हिफाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।2" "शेख मखमुर" कहानी का पात्र 'मसऊद' एक ऐसा सिपाही ही है जो अपने कठिन प्रयासों से देश को आजाद करने में सफल होता हैमसऊद पर सारी फौज गर्व करती थी और उस पर जानें वारने के लिए हथेली में सर लिये रहती " - थी। जिस वक्त उसने तलवार खोली है, दो हजार सूरमा सिपाही मियान पर, हाथ रक्खे और शोले बरसाती हुई आँखों से ताकते, कनौतियाँ बदल रहे थे। मसऊद के एक जरा से इशारे की देसे देर थी और दम के दम में लाशों की ढेर लग जाते।3"

**समकालीन कथा साहित्य -** समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में वैश्वीकरण के प्रभाव अधिक प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते हैं। उदय प्रकाश की कहानी पीली छतरी वाली लड़की शहरी जीवन के अकेलेपन, उपभोक्तावादी सम्बन्धों और मानवीय संवेदना के क्षरण को उजागर करती है। कहानी में कस्बाई निम्न मध्यवर्गीय जीवन, बेरोजगाजरी, असुरक्षा और संघर्ष दिखाई देता है। यह भारत की वास्तविक तस्वीर को सामने लाता है जो राष्ट्रीय अस्मिता का आधार है। यह उदय प्रकाश की विशेषता है कि वे समाज के हाशिये पर खड़े लोगों को केंद्र में लाते हैं। यह समावेशी दृष्टि भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता को व्यापक और लोकतांत्रिक बनाती है। पीली छतरी आशा, पहचान और मानवीय गरिमा का प्रतीक हैं। यह दर्शाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी भारतीय समाज में उम्मीद और संवेदना शेष है, जो राष्ट्रीय चरित्र का एक महत्वपूर्ण गुण है।

**फांस-** "उदारीकरण के चलते सरकार का रवैया ही कारपोरेट वाला हो चुका है -बिल्कुलठुस्स यांत्रिक-, कारपोरेट कल्चर या बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जाहिर तौर पर किसी बड़ी पूंजी की प्रसूत होती है, बड़ी पूंजी बाजार में लाभ कमाने के उद्देश्य से आती है। उसकी सामाजिक जिम्मेदारी सिर्फ इतनी होती है कि ग्राहक या उपभोक्ता जिंदा रहे। इन्हें या इनके प्रतिनिधि नेताओं को जमीन की गुणवत्ता सिंचाई की प्रकृति और पैदावार से कोई मतलब नहीं।4" लेखक संजीव के शब्दों में अपुन का देश भी क्या कमाल का देश ठहरा। " - ठीक ही कहता है माना, थार की धूल अमेरिका में गिरती है और विदर्भ की आत्महत्या की खबर पूरी दुनिया में विदर्भ ही क्यों पंजाब, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, बुन्देलखंड की भी।"5 असगर वजाहत की कहानियाँ, विशेष रूप से 'सबसे सुंदर लड़की', सांस्कृतिक संघर्ष और मानवीय मूल्यों के पक्ष में खड़ी दिखाई देती हैं। उनके यहाँ राष्ट्रीय अस्मिता किसी संकीर्ण राष्ट्रवाद में नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों और सांस्कृतिक चेतना में निहित है।

**विस्थापन और पहचान-** वैश्वीकरण और औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप विस्थापन हिन्दी कथा साहित्य का एक प्रमुख विषय बन गया है। संजीव के उपन्यास , 'फाँस' और 'रह गई दिशाएँ इसी पार' में आदिवासी समाज के विस्थापन और सांस्कृतिक विनाश का मार्मिक चित्रण मिलता है। यहाँ विकास बनाम संस्कृति का संघर्ष राष्ट्रीय अस्मिता के प्रश्न को गहराई से उजागर करता है।

**हिन्दी कविता में वैश्वीकरण और राष्ट्रीय अस्मिता- प्रतिरोध की कविता-** हिन्दी कविता में वैश्वीकरण के विरुद्ध प्रतिरोध की सशक्त परंपरा दिखाई देती है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में लोकबोध, भाषा की आत्मीयता और स्थानीय अनुभव राष्ट्रीय अस्मिता को सुरक्षित रखते हैं। उनकी कविता बाघ वैश्विक शक्तियों के सामने स्थानीय अस्तित्व के संघर्ष का प्रतीक बन जाती है। धूमिल की कविता 'मोचीराम' सत्ता और बाजार के विरुद्ध आम आदमी की आवाज है। यहाँ राष्ट्रीय चेतना जनपक्षधर रूप में सामने आती है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है।

**समकालीन कविता-** अरुण कमल की कविताओं में वैश्वीकरण के कारण बदलते सामाजिक संबंधों श्रम की उपेक्षा और मानवीय अलगाव को देखा जा सकता हैं। इस सन्दर्भ में अरुण कमल जी की कविता 'किस वतन के लोग' की पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं

अन्तिम सन्दूक लिए
आखरी ढोर डोंगर लिए
एक पाँव में चप्पल डाले
नंगे पाँव खाली देह लिए
ये कौन है, कौन लोग, ये कौन
कहाँ जा रहे हैं इतने पाँव
बंगलुरू से मुम्बई बागडोगरा
दिल्ली अनन्तनाग अबूझमाड़ दरभंगा से
अपने ही घर अपनी ही रसोई से
ये किस देश किस वतन के लोग हैं
कहाँ है इनका राष्ट्र इनकी भूमि?[6]

(अरुण कमल(

अनामिका की कविताएँ स्त्री अस्मिता को राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ती हैं। उनके यहाँ राष्ट्र केवल पुरुष प्रधान संरचना नहीं, बल्कि स्त्री अनुभवों और संवेदनाओं से निर्मित मानवीय इकाई के रूप में सामने आता है। 'टोकरी में दिगंतथेरी गाथा-' में अनामिका ने लिखा है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने जन्म से लेकर मृत्यु तक " पुरुषों पर स्त्री के स्वयं से हीनतर होने का जो आवरण मढ़ा है उसे अनामिका समस्या की मूल जड़ मानती है। आम्रपाली का रथ तरुण लिच्छवी कुमारों के रथ से टकरा जाने पर भी आम्रपाली का स्वाभिमानता से डरे रहना तथा आर्य पुत्रों का यह कहना कि हाय", हम आम्रपाली से परास्त हुए।[7]" इस व्यवस्था की ओर संकेत करता है

**दलित, स्त्री और आदिवासी विमर्श -राष्ट्रीय अस्मिता का विस्तार :**

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में उभरे दलित, स्त्री और आदिवासी विमर्शों ने राष्ट्रीय अस्मिता को नई परिभाषा दी है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' सामाजिक बहिष्कार, अपमान और पहचान के संघर्ष को उजागर करती है। कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' दलित स्त्री की त्रिस्तरीय पीड़ा जाति -, वर्ग और लिंग को सामने लाती है। महादेवी वर्मा की रचनाएँ, यद्यपि पूर्वकालीन हैं, स्त्री चेतना को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से जोड़कर राष्ट्रीय अस्मिता का मानवीय पक्ष प्रस्तुत करती हैं।

**प्रवासी हिन्दी साहित्य और वैश्विक पहचान-** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप प्रवासी हिन्दी साहित्य का विकास हुआ। तेजेंद्र शर्मा और अभिमन्यु अनंत की रचनाओं में सांस्कृतिक द्वंद्व, जड़ों से जुड़ाव और पहचान का संकट प्रमुख विषय हैं।

**निष्कर्ष-** वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य ने राष्ट्रीय अस्मिता को केवल अतीत की स्मृति के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत और संघर्षशील चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। कथा, कविता, आत्मकथा और आलोचना - सभी विधाओं में राष्ट्रीय अस्मिता नए अर्थों में सामने आतीहै। हिन्दी साहित्य वैश्वीकरण की चुनौतियों के बीच भारतीय संस्कृति, लोकबोध और मानवीय मूल्यों की रक्षा करते हुए राष्ट्रीय अस्मिता को अधिक लोकतांत्रिक, समावेशी और जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची-


1. सिंह, नामवर. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं0 47
2. प्रेमचंद, मुंशी. प्रेमचंद की जब्तशुदा कहानियां. नई दिल्ली : मनोज पब्लिकेशन, पृष्ठ सं० 13
3. प्रेमचंद, मुंशी. प्रेमचंद की जब्तशुदा कहानियां. नई दिल्ली : मनोज पब्लिकेशन, पृष्ठ सं० 78
4. प्रेमचंद, मुंशी प्रेमचंद की जब्तशुदा .कहानियांमनोज पब्लिकेशन : नई दिल्ली ., पृष्ठ सं० 13
5. प्रेमचंद, मुंशीमनोज पब्लिकेशन : नई दिल्ली .प्रेमचंद की जब्तशुदा कहानियां ., पृष्ठ सं० 78
6. संजीव. फांसवाणी प्रकाशन :नई दिल्ली ., पृष्ठ सं० 109
7. संजीववाणी प्रकाशन : नई दिल्ली .फांस ., पृष्ठ सं० 53
8. कमल, अरुण. योगफल कवितावाणी प्रकाशन : नई दिल्ली ., पृष्ठ सं० 70
9. अनामिका टोकरी में दिगंतराजकमल प्रकाशन : नई दिल्ली .थेरीगाथा-, पृष्ठ सं० 16


************